

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषाहिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

द्विंशत-भाग-2

श्रीकृष्ण - पद - 2

कवि - सुरदास

Page No.:

Date: / /

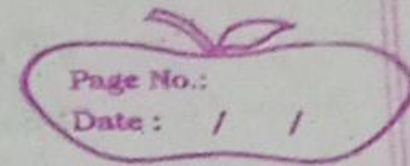
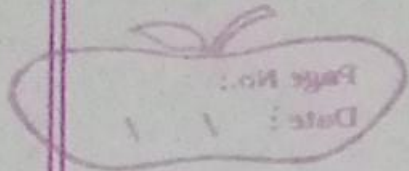
जैवत स्वाम नंद की कनियाँ।

कल्लुक खात, कल्लु प्यरनि गिरघत, दक्षि निरखति नंद-रनियाँ ।
बरी-बरा बेसन, बहु भौतिनि, वंजन विविध, अंगनियाँ ।
डारत, खात, लेत अपने कर, रुचि मानत दक्षि दोनियाँ।

जो रस नंद-जसोदा बिलसत, सो नहीं तिहुँ भुवनियाँ ।
भोजन करि नंद अचमन लीन्हौ, माँगत सूर जुठनियाँ ॥

भावार्थ:- प्रस्तुत पद में महाकवि सुरदास श्रीकृष्ण के भोजन करने का वर्णन करते हैं। श्रीकृष्ण को पिता नन्द जीव में बिठाकर खिला रहे हैं। श्रीकृष्ण कुछ खाते हैं कुछ प्यरी पर गिरा देते हैं। उनकी माता नन्दरानी यशोदा पहलूमा देखकर चिन्तित हो रही हैं। भोजन में अनजिनत प्रकार हैं। उसमें बेसन के बने बड़े विशेष महत्वपूर्ण हैं। वे खाते हैं, गिराते हैं और कभी-कभी अपने ही हाथों से खाने के लिए भोजन उठा लेते हैं। खाने में रखे दही के प्रति उनकी विशेष रुचि है। उसमें मिश्री तथा मक्खन मिलाकर वे अपने मुख में डालते हैं। कुछ दही मुँह में लगा रह जाता है जिससे उनकी शोभा और भी बढ़ जाती है। कवि को ऐसा लगता है कि मानो स्वयं सुन्दरता कृष्ण को पाकर चिन्तित हो गयी। बाल स्वभाव के अनुरूप कृष्ण न केवल स्वयं खाते हैं अपितु माता नन्द के मुँह में भी भोजन डाल देते हैं। इस दृश्य को देखकर नन्द जी बहुत प्रसन्न हो रहे हैं। इस तरह कवि कहना चाहता है कि क्रीड़ा करते हुए भोजन करने की जो अंगिमा कृष्ण की है उसके द्वारा जो आनन्द नन्द तथा यशोदा को प्राप्त हो रहा है वह तीनों लोक में किसी को भी प्राप्त नहीं है। भोजन सभाप्र हो जाता है नन्द उठकर आचमन करा देते हैं। कवि इस तुल्य भोजन का अकशेष जूहन के रूप में माँगता है।

इस पद में बाल कृष्ण के भोजन करने का वर्णन है।
शेष अर्थ -



भोजन कर रहे हैं कृष्ण और आनन्द मिल रहे हैं नन्द-
और यशोदा को। माता-पिता के रूप में नन्द यशोदा तथा
वर्णन करने वाले के रूप में कवि सुरदास इस भोजन का
रस लेकर चान्च हो रहे हैं। इस पद में कवि ने वाक्सन्ध
रस का मनोरम चित्रांकन किया है।

डॉ. देव चरण प्रसाद 04/12/20
एल. ए. सी. हिन्दी
शा. अ. सं. महा वि. सुरसेना, पूर्णियाँ ।

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अंक 0- पत्र

अध्यापक-वर्ग - काठ्य खण्ड
कवि - श्री मैथिलीशरण गुप्त

Date: _____ Page: _____

उस ओर भूरिश्रवा सै वीर साधक लड़ रहा,
भंभानिल प्रेरित जलद ज्यों हो जलद सै अढ़ रहा।
बहु युद्ध करने सै प्रथम ही या यदापि साधक चका;
पर देव अर्जुन को निकट उल्लाह सै वह वादका।।

भावार्थ

प्रस्तुत पद के माध्यम से कवि ने साधक और भूरिश्रवा के बीच हुए युद्ध का विस्तार से वर्णन किया है। कवि कहता है कि कौरवों की ओर से भूरिश्रवा साधक से युद्ध करने लगा। उन दोनों का युद्ध ऐसा लगा रहा मानो आँधी या तूफानी वायु से प्रेरणा पाकर बादल-बादल से ही अड़ रहा हो। इसके साथ ही बहुत अधिक युद्ध करने से पूर्व ही साधक चक गधा था किन्तु वह अर्जुन को अपने समीप देखकर दुगने उल्लाह से भर गया।

कवि ने प्रस्तुत पद्यांश में भूरिश्रवा और साधक के बीच हुए भीषण युद्ध का वर्णन किया है। दोनों योद्धाओं के युद्ध कौशल को देखकर अन्य सारे वीर हतप्रभ हो गये। वेश्मी वीर परस्पर लड़ना छोड़कर इन दोनों के युद्ध देखने लग जाते हैं। इस पद में वीर रस की प्पाश प्रवाहित हो रही है।

डॉ० देव चरम प्रसाद

एल० प्री० हिन्दी

04/12/20

राष्ट्रसंघ महाविठ सुखसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अण्डि-पत्र

'पथिक' खण्ड काव्य
कवि:- श्री रामनरेश त्रिपाठी

प्रश्न:- 'पथिक' काव्य में राजा के क्रोध और बुद्धिहीनता पर प्रकाश डालें।

उत्तर:- आधुनिककालीन हिन्दी साहित्य के चर्चित कवि श्री- राम नरेश त्रिपाठी ने अपने खण्ड काव्य 'पथिक' में राजा के क्रोध और बुद्धिहीनता पर विस्तार से प्रकाश डाला है। जब पथिक की हत्या राजा के आदेश से कर दी गयी तो पूरे देश में राजा के विरुद्ध असंतोष फैल गया। आम जन-मानस में क्रान्ति की चिंगारी सुलगने लगी। राजा को अपने अहंकार पर विश्वास था, इसी मद् में मदमस्त होकर वह अन्धा बन चुका था। अच्छे-बुरे के भेदभाव से वह अन्याय हो गया था। यह उसकी मूर्खता पूर्ण भावना थी कि वह पथिक के सारे स्मृति चिह्नों को मिटा देना चाहता था। जब पथिक की प्तर जलाने की बात आई तब प्रजा में खनसनी फैल गयी। अब ऐसी स्थिति हो गयी थी कि प्रजा विद्रोह प्रकट करे किन्तु इसमें थोड़ी देर थी। परन्तु राजा ने स्वयं प्रजा को विद्रोह करने के लिए विवश कर दिया।

राजा की आज्ञा में पथिक का नाम सुनकर प्रजा को कुछ राहत मिली क्योंकि उन्हें तो पथिक का नाम तक लेने की अनुमति नहीं थी। जैसे ही यह नाम लिया गया, प्रजा के मानस पटल पर पथिक के सम्बन्ध में सारी स्मृतियाँ पुनः उमड़ आईं और वे सभी पुनः विद्रोह के दुःख में डूब गये। किन्तु इतना तो निश्चित था कि इस नाम स्मरण से उन्हें संतोष प्राप्त हुआ।

पथिक की याद सजीव होते ही प्रजा का आलस्य दूर हो गया। उनकी प्रसन्नता पुनः प्रकट हुई। परन्तु एक लम्बे समय से रुका हुआ दुःख का बैग फटा पड़ा और राजा का अहंकार समाप्त हो गया।

श्री देव चरण प्रसाद

रविवार प्रीत हिन्दी

05/12/20

राष्ट्रसंघ महाविद्यालय सेनापूरिया